रात्रि क्लास 16-12-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बेहद का बाप आते ही हैं बच्चों को खुश करने। कल्प कल्प सभी का दुःख दूर करने आते हैं। समझा देते हैं मेरे को याद करने से दुःख सभी दूर हो जावेंगे। बाकी रहा पद। वह फिर पढ़ाई पर है। सो भी जास्ती नहीं है। सिर्फ चक्र को जानना है। स्वदर्शनचक्रधारी बनते हो। स्व को ज्ञान हुआ चक्र का। समझना है और समझाना है। चक्र में रोला है। हम कहते हैं 5000 वर्ष का चक्र, वह कहते हैं लाखों वर्ष का चक्र है। इसमें ही मनुष्य घूमते हैं। बाप कहते हैं इस यज्ञ में विघ्न पड़ते हैं क्योंकि लड़ाई है। रावण-राज्य में विघ्न जरूर पड़ते हैं। नई दुनिया में कोई झगड़ा आदि नहीं है। बाप आकर सभी झगड़ा मिटा देते हैं। बच्चे जानते हैं बाप को याद करना है। तो सतोप्रधान बन जावेंगे। सतोप्रधान में झगड़ा होता ही नहीं। उन्हों के गुण गाते हैं। अपनी अवगुण वर्णन करते हैं। और देवताओं के गुण गाते हैं। इससे ही सिध होता है। अभी तुम बच्चे वह बन रहे हो तो ऐसा महिमा लायक बनना है। माया की लड़ाई भी बड़ी कड़ी है। हार जीत का खेल है। यह है रूहानी बच्चों को हार-जीत का खेल। बच्चे माता आत्माएं। आत्मा हार खाती है और जीत पाती है। बाप कहते हैं मैं जीत पहनाता हूं। माया हार खिलाती है। कोई ऊंच पद कोई कम पद पा लेते। देवता जरूर बनते हैं। जैसे बैरिस्टर जरूर बनते हैं फिर कोई ऊंच कोई कम। पुरुषार्थ सभी करते रहते हैं। हिम्मत महावीरपना दिखाते हैं। बाप सुनकर खुश होते हैं। फिर भी शुभ बोलते हैं। हार्टफेल नहीं होते हैं। फट कहते हैं हम तो नारायण बनेंगे। बाप कहते हैं अच्छा शुभ बोलते हो। तेरी जय हो। सुखधाम तो जाते हो बाकी जो कहते हैं हम नारायण बनेंगे वह तो बच्चे भी समझ सकते हैं, बाप दादा भी समझ सकते हैं। सभी तो एकरस बन न सकें। कुछ न कुछ भूल चुक अन्त तक होती रहेंगी जबतक कर्मातीत अवस्था हो। है तो पढ़ाई। जबकि देवता बनना है तो देवीगुण भी जरूर चाहिए। नम्बरवार बनते हैं। कोशिश कर जितना हो सके उतना बच्चों को समझाना चाहिए। यह तो समझते हैं कल्प कल्प जो पुरुषार्थ किया है वही करेंगे। सभी तो एक जैसे कर सके। बाप भी है टीचर भी है गुरु भी है तीनों को शिक्षा देनी पड़ती है। वन्डर यह है। यह एक ही है तो सहज है याद करना। बाबा हमारा बाबा भी है गुरु भी है। यह आत्मा मनुष्य की। वह दूसरी आत्मा जो बैठी है वह है ईश्वर। इनकी आत्मा को घड़ी2 शरीर मिलता है। वह जन्म नहीं। आधार लेते हैं। कहते हैं मेरा जन्म अलौकिक दिव्य है। और कोई का नहीं होता। इनका जन्म भी न्यारा कर्म भी न्यारा है। कोई लेप छेप नहीं लगता है। माया की लड़ाई तुम्हारी है। मेरी नहीं। मैं तुमको युक्ति बताता हूं। ऐसे2 करो। बच्चे जानते हैं ड्रामा अनुसार हमारी विश्व पर जीत है। हम बाप का बनते हैं, बनने से ही हम विश्व का मालिक बन जाते हैं। पढ़ाई से पद मिलता है। यह भी वन्डर है कितनी हेवज ड्रामा बन जाती है। हिस्ट्री तो हू बहू रिपीट होगी। सिर्फ टाईम का फर्क है। उन्होंने लाखों वर्ष आयु बताकर अंधियारे में डाल दिया है। गीताएं बहुत बनाई हैं। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। यह कोई परम्परा से चलता नहीं है। दुनिया ही बदली हो जाती है। तुम पुरुषोत्तम संगम युग पर पढ़ते हो नई दुनिया के लिये। यह है कल्याण कारी युग। तुमको पता है कुछ न कुछ कला कम होती है। फिर सभी खत्म हो जाती है। बच्चों को नालेज तो बड़ी अच्छी मिलती है। गुणवान भी बनना है। पुरुषार्थ बन्द नहीं हो सकता। ला नहीं कहता। असम्भव है। ड्रामा में सभी का पार्ट मिला हुआ है। पुरुषार्थ का। पुरुषार्थ करते ही रहते हैं। पुरुषार्थ बड़ा या प्रारब्ध? तो कहेंगे पुरुषार्थ बड़ा। हर बात में पुरुषार्थ करना होता है। बाप श्रीमत देते हैं तो पुरुषार्थ भी श्रेष्ठ चलना चाहिए। मुख्य है काम विकार। जिसके लिये ही बाप कहते हैं यह महाशत्रु है। इन पर जीत पाने से ही तुम जगती जीत बनेंगे। सारा मदार पुरुषार्थ पर है। बच्चों को खुशी होती है हम सुखधाम जावेंगे। बाप भी दिलासा दिलाते हैं। बाकी थोड़ा टाईम है। तुम इस समय बहुत ही भाग्यशाली हो। ईश्वर पढ़ाते हैं। वहां तो देवता पढ़ाते हैं। पढ़ाई सोर्स आफ इनकम है। बाप पढ़ाते भी हैं जरूर। स्वर्ग का मालिक बनावेंगे। फिर पद कम जास्ती पढ़ाई पर होती है। बाप कहते हैं फालो मी। फालो फादर एण्ड मदर। भूलें तो होती रहती हैं। देवी गुण धारण करने भी पुरुषार्थ करते रहते हैं।

तो माया उस में विघ्न डालती है। सावधान किया जाता है इस चलन से तुम ऊंच पद पा न सकेंगे। किसको नहीं मानते हैं तो फिर उनके बड़ो को कहना पड़ता है। ऐसी भूलें होती है। फिर समझाना पड़ता है। कई ऐसे होते हैं जो अपनी भूल समझते ही नहीं। फिर समझाना पड़ता है। बाप कहते हैं काम चिक्षा पर बैठ कितने बेसमझ बन गये हो। श्याम सुन्दर की कहानी कैसी अच्छी है। कब और कोई बता न सके। इसलिये ही कहा जाता है श्री श्रीश्री श्रेष्ठ तें श्रेष्ठ। श्री श्री सो हुआ बाप। फिर हमको श्री बनाते हैं फिर श्रेष्ठ बनते हैं। भ्रष्ट में भी नम्बर है। परन्तु उनकी माला नहीं गाई जाती है। सतयुग में भी श्रेष्ठ हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर यहां है भ्रष्ट। उनमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप को पुकारते भी हैं आओ आकर हमको तमो प्रधान से सतोप्रधान बनाओ। बाप कहते हैं मैं आऊं कहां। तमोप्रधान मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। तो बेल रख दिया है। शिव नाम रूप वाला रखा है। शंकर भी नाम रूप वाला। वह निराकार वह साकार। दोनों को इकट्ठा कर दिया है। अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं मैं तो निराकार हूं। शंकर तो सूक्ष्म वतन का हो गया। बाप ने समझाया है शंकर कोई है नहीं। अर ऐसे2 चित्र चार भुजा आदि वाला कोई है नहीं। वैष्णव अर्थात विष्णु के कुल वाले। प्रजापिता ब्रह्मा के कुल से फिर विष्णु के कुल का बनते हैं। विष्णु को चतुर्भुज दिखाया है। बाप ने तो सूक्ष्म वतन को भी उड़ा दिया है' यह सभी साक्षात्कार है' ब्रह्मा सो विष्णु। विष्णु सो ब्रह्मा। सो तो यहां ही बनते हैं। बच्चों को बहुत समझाते रहते हैं साथ में यह भी समझाते हैं याद करो। तो सतोप्रधान बन जावेंगे। अनेक बार तुम बच्चों ने मिलकर पहाड़ को उठाया है। पत्थर के पहाड़ से सोने का पहाड़ हो जावेगा। क्योंकि वहां अथाह सोना होता है। बाकी पहाड़ कोई बदल थोड़े ही जावेगा। मनुष्य की बुधि सोने पत्थर बन जाती हैं। कोई भी बात में मुंझना न है' बाप ने कहा है मुझे याद करो। और कोई बात में सवाल करने की दरकार नहीं। टाईम वेस्ट होता है। बाप ने कहा है स्वीटहोम स्वर्ग में जाने चाहते हो ना। बाकी फालतु प्रश्न आदि क्यों पूछते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो सतोप्रधान बनो। सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिल सकती है, ज्ञान है बहुत सीधा। जो हमारे धर्म का न होगा वह समझेंगे फिर कैसे।

16-12-68 मु2

यहां बैठे अभयास करने से यही याद आवेगा। रचयिता और रचना का चक्र ही याद रहना चाहिए। बाप और वरसा स्वर्ग का। बाप स्वर्ग रचते हैं। बाप को याद करना है। माया भूलाती है। भूल भूलईया का खेल है। धंधा आदि करना है परन्तु समझना है समय बाकी कितना है। शरीर निर्वाह चलता रहे इतना ही रखना है। व्याज आदि की भी लालच नहीं। हिसाब ऐसा रखना चाहिए जो पैसा है उन से रोटी टूकड़। बस। या तो हम शिव बाबा के खजाने में दे देते हैं। फिर हम उन से खाते रहेंगे। शिव बाबा का भण्डारा भरपूर। काल कंटक सभी दूर। सन्यासियों को रोटी मिलती ही है। यहां भी शिव बाबा के भण्डारे से रोटी मिलनी ही है। तुम सभी सांवरे हो। तुमको गोरा बनाने हुण्डी भराता हूं। इसमें ही बच्चों को निश्चय बुधि चाहिए। स्प्रीचुअल फादर स्प्रीचुअल बच्चों को ही नालेज देते हैं। इसलिये बोला है लिखो: इनकारपोरीयल गाड फादर ही स्प्रीचुअल नालेज दे सकते हैं। मनुष्यतो क्या देवता भी नही दे सकते हैं। देते फिर भी हैं ब्राह्मणों को। ब्राह्मण का है कुल। बाप भी यहां है। समझते तो सभी कुछ हैं। और समझाते भी रहते हो। बाप ने कितना समझाया है। परन्तु तमोप्रधान बुधि होने कारण बैठता ही नहीं हैं। तुम जीते जी बाप को याद करते हो। सतोप्रधान बनते हो ऊंच पद पाने। सबसे डिफिकल्ट है याद की यात्रा। और सभी से बुधियोग तोड़ एक से लगाते हो। विनाश का समय होगा तो तुम्हारी याद की यात्रा पूरी होगी। सारा मदार इस पर है' क्योंकि याद की यात्रा अभी बच्चों को बहुत कम है, अखबार में था यहदो हैं अमेरिका, और रीसया। दोनो चाहे तो विनाश करे या शांत करे परन्तु शांति तो होनी नहीं हैं। वह लड़ेंगे मकान तुमको मिल जावेगा। यह बेहद का ड्रामा बड़ा ही मजे का है। अच्छा गुडनाइट।